Bihar Board Class 11th Hindi Book Solutions गद्य Chapter 7 सिक्का बदल गया

सिक्का बदल गया पाठ्य पुस्तक के प्रश्न एवं उनके उत्तर

प्रश्न 1.
शाहनी के मन में किस बात की पीड़ा है, फिर भी वह शेरा और हसैना के समक्ष हल्के से हंस पड़ती है। क्यों?
उत्तर-
भारत विभाजन का समय है। पाकिस्तान से हिन्दू घरबार छोड़ कर भारत आ रहे हैं। उन लोगों में शाहनी भी एक महिला है जो अपना घर-द्वार छोड़ने की तैयारी में हैं। उनका सब कुछ छूट रहा है। हरे-भरे खेत, विशाल महल सब कुछ छूट रहा है। इसी बात की पीड़ा है शाहनी के मन में।

जब शाहनी चनाब नदी से स्नान कर लौट रही है, उस समय उसकी भेंट शेरा और हसैना स होती है। दोनों आपस में झगड़ने लगते हैं। शाहनी बीच-बचाव करती है। शाहनी को यह भी पता है कि रात में कुल्लूवाल के लोग वहाँ आये थे। शेरा भी उस बैठक में सम्मिलित था। शाहनी को मारने की जिम्मेदारी उसे ही सौंपी गई थी। शाहनी यह सब कुछ समझती है बावजूद वह दोनों को अपना स्नेह देती है और हँस पड़ती है।

प्रश्न 2.
शेरा कौन है और उसके साथ साहनी का क्या संबंध है?
उत्तर-
शेरा 'सिक्का बदल गया' प्रस्तुत कहानी का एक प्रमुख पात्र तथा शाहनी का नौकर है। कथानायिका शाहनी के साथ उसका नजदीकी संबंध है। वह शाहनी का मातहत रहा है और अपनी माँ जैना के मरने के बाद शाहनी के पास ही रहकर पला-बढ़ा है।

प्रश्न 3.
शेरा के भीतर प्रतिहिंसा की आग क्यों है?
उत्तर-
शेरा मुसलमान है। वह उन दंगाइयों में सम्मिलित है जो पाकिस्तान में रह रहे हिन्दुओं को मारते थे और कुछ को घर-द्वार, जमीन-जायदाद, सोना-चाँदी, रुपये-पैसे छोड़ कर देश छोड़ने को मजबूर करते थे। भारत में बसे मुसलमान भी मारे जा रहे थे एवं भारत से निकाले जा रहे थे। शेरा के मन में प्रतिहिंसा का भाव था।

शेरा के मन में शाहनी के प्रति भी हिंसा का भाव है। वह सोचता है कि शाहनी को अपना घर-द्वार छोड़ना ही है। शाहनी को वह मारना भी चाहता है। उसके मन में यह भाव भी आता है कि शाहजी (शाहनी के स्वर्गवासी पति) ने भी उनलोगों से सूदखोरी करके धन कमाया है। ऐसा सोचते हुए प्रतिहिंसा की आग शेरे की आँखों में उतर आई। गड़ासे की याद आ गई। लेकिन शाहनी की ओर देखकर रूक गया। शाहनी ने उसे अपने बेटे के समान पाला था। यह बात उसे याद आ गई।

प्रश्न 4.
शाहनी अपना घर छोड़ते हुए भी विरोध में एक स्वर नहीं निकाल पाती। ऐसा क्यों।
उत्तर-

शाहनी को मालूम है कि भारत का विभाजन हो गया है। शाहनी को अपना घर छोड़ते हुए अपार दुःख और कष्ट होता है। उसने इस दिन की कभी कल्पना भी नहीं की थी। फिर भी, वह विरोध में एक स्वर भी नहीं निकाल पाती है तो इसका कारण यह है कि वह भीतर से पूरी तरह टूट चुकी है ओर सामने आयी विपरीत एवं अपरिवर्तनीय परिस्थिति की हकीकत भली-भाँति समझ चुकी है।

प्रश्न 5.
शाहनी के हाथ शेरा की आँखों में क्यों तैर गये?
उत्तर-
शेरा अपनी माँ मृत्यु के पश्चात् शाहनी के पास रहकर ही पला-बढ़ा है। किन्तु, कठिन कालचक्र के फेर में फंसकर वह फिरोज के साथ उसकी हत्या करने एवं उसके सारे सामानों को लूटने की दुरभिसंधि कर लेता है। किन्तु, उसके अंदर मानवता अभी शेष है। अतः उस भयानक कृत्य के पूर्व उसकी आँखों में शाहनी के हाथ तैर जाते हैं, जिन हाथों से वह कटोरा भर दूध पिया करता था।

प्रश्न 6.
शेरा की फिरोज के साथ क्या बात हुई थी?
उत्तर-
शेरा की फिरोज के साथ यह बातचीत हुई थी कि वह शाहनी को मार देगा और . . उसके सारे सामनों को आधे-आधे बाँट लेगा।

प्रश्न 7.
जबलपुर में आग क्यों लगाई गई थी? धुआँ देख साहनी क्यों चिंतित हो गई थी?
उत्तर-
जबलपुर में लगी आग सुनियोजित षड्यंत्र का हिस्सा थी। वह आग दहशत फैलाने के उद्देश्य से लगाई गई थी। जब वहाँ आग लग गई, तो आसमान में उठे धुओं को देखकर शाहनी पोर्ट गोल्डेन सीरिज पासपोर्ट अत्यंत चिंतित हो गई, क्योंकि उसके सगे-संबंधी, नाते-रिश्तेदार सब वहीं रहते थे।

प्रश्न 8.
दाऊद खाँ की कैसी स्मृतियाँ शाहनी से जुड़ी हैं?
उत्तर-
दाऊद खाँ एक थानेदार है। ट्रक पर हिन्दू जमा हो रहे हैं। उन्हें हिन्दुस्तान की सीमा पर पहुँचना दाऊद खाँ की ड्यूटी है। जब ट्रक शाहनी की हवेली के सामने खड़ी हुई तो दाऊद खाँ पुलिस की अकड़ के साथ शाहनी के दरवाजे पर पहुंचा। सहसा दाऊद खाँ ठिठक गया। वही शाहनी है जिसके शाहनी उसके लिए दरिया के किनारे खेमे लगावा दिया करते थे। यह तो वही शाहनी है, जिसने उसकी मंगेतर को सोने के कनफूल मुँह दिखाई में दिये थे। यही स्मृतियाँ दाऊद खाँ की शाहनी से जुड़ी हैं।

प्रश्न 9.
भागोवाल मसीत के लिए शाहनी ने दाऊद खाँ को क्या दिया था?
उत्तर-
दाऊद खाँ थानेदार था। एकदिन वह शाहनी के घर आया। भागोवाल मसीत (मस्जिद) के लिए शाहनी ने दाऊद खाँ को मांगने पर पूरी की पूरी राशि तीन सौ रुपये दे दिये थे।

https://www.evidyarthi.in/

प्रश्न 10.
थानेदार दाऊद खाँ बार-बार शाहनी से नकद रखने का आग्रह करता है। तब भी शाहनी नहीं रखती है। क्यों?
उत्तर-
शाहनी अपना घर छोड़ हिन्दुस्तान आ रही है। वह अपनी हवेली से बेहद प्यार करती है। बिना कुछ लिए वह घर छोड़ देती है। इस पर दाऊद खाँ जो थानेदार है, बार-बार शाहनी से कुछ नकद रख लेने का आग्रह करता है। लेकिन शाहनी नकद नहीं रखती है। वह दाऊद खाँ को जवाब देती है-"नहीं बच्चा, मुझे इस घर से नकदी प्यारी नहीं। यहाँ की नकदी यही रहेगी।" शाहनी के इस उत्तर से दाऊद खाँ निरुत्तर हो गया। शाहनी अपनी हवेली से बेहद प्यार करती थी।

प्रश्न 11.
दाऊद खाँ क्यों चाहता है कि शाहनी हवेली छोड़ते हुए कुछ साथ रख
ले।
उत्तर-
थानेदार दाऊद खाँ शाहनी का बहुत आभारी और उपकृत है। शाहनी ने समय-समय पर उसकी मदद की थी। अत: वह भी अपनी सलाह से शाहनी को भविष्य के संकटों से निबटने हेतु कुछ नकद साथ रखने को कहता है। उसकी व्यावहारिक बुद्धि जानती है कि संकट के समय में पास की पूँजी बड़ी काम आती है। इसी सदिच्छा और आत्मीयता वश दाऊद खाँ चाहता है कि शाहनी हवेली छोड़ते हुए कुछ नकद पैसे साथ रख ले।

प्रश्न 12.
दाऊद खाँ को शाहनी के पास खड़े देखकर शेरा ने क्यों कहा-"खाँ साहिब, देर हो रही है।"
उत्तर-
शाहनी हवेली छोड़ने वाली थी। घर से निकलने में ममता आ रही थी। अपना घर सदा के लिए छोड़ना था। पाकिस्तान छोड़कर भारत आना था। शाहनी हवेली की ड्योढ़ी पर आकर खड़ी थी। इसी बीच थानेदार दाऊद खाँ को बीती हुई बातें याद आ जाती हैं। शाहनी ने उसकी मंगेतर को सोने के कनफूल मुँह दिखाई में दिये थे। यह स्मृति दाऊद खाँ झकझोर देती है। दाऊद को सहानुभूति आ जाती है।

वह बार-बार शाहनी को कुछ साथ लेने की सलाह देती है। जब वह सोना चाँदी साथ ले लेने को कहता है तो शाहनी जवाब देती है है-"सोना चाँदी। मेरा सोना तो एक-एक जमीन में बिछा है।" दाऊद खाँ निरूत्तर हो जाता है। वह फिर कहता है-शाहनी, कुछ नकदी जरूरी है। इस पर शाहनी कहती है-"नहीं बच्चा, मुझे इस घर से नकदी प्यारी नहीं। यहाँ की नकदी यहीं रहेगी।"

प्रश्न 13.
शाहनी किसके सुख-दुख की साथिन थी?
उत्तर-
शाहनी अपनी हवेली छोड़ने जा रही हैं। गाँव के सभी लोग इकट्ठा होने लगे। शाहनी गाँव के सभी बड़े-बूढ़ों, बूढी-बूढ़ियों के सुख-दुख की साथी थी। जब शाहनी ने अपनी ड्योढ़ी के बाहर पैर रखा तो सभी बुढ़ियाँ रो पड़ी क्योंकि शाहनी सबके सुख-दुख में हाथ बँटाती थी।

प्रश्न 14.
चलते समय इस्माइल ने शाहनी से क्या कहा?
उत्तर-

हवेली छोड़कर जाते समय शाहनी से इस्माइल ने यह कहा कि “शाहनी, कुछ कह जाओ। तुम्हारे मुँह से निकली (अ) सीस झूठी नहीं हो सकती।” इस्माइल के इस कथन से साहनी के बारे में लोगों की धारणा का पता चलता है।

प्रश्न 15.
खूनी शेरे का दिल क्यों टूट रहा था?
उत्तर-
शेरा शाहनी का नौकर था। खूनी शेरे का दिल इसलिए टूट रहा था कि माँ के मरने के बाद शाहनी ने ही उसे दूध पिलाकर पाला-पोसा था। उसके सामने उसे दूध पिलाकर पालने वाली, उस पर प्यार का हाथ फेरने वाली शाहनी जा रही थी और वह चाहकर भी कुछ न कर सकता था।

प्रश्न 16.
शाहनी शेरे को क्या आशीवाद देती है?
उत्तर-
ट्रक पर बैठते समय शाहनी के पीछे गाँव के लोग शोकाकुल थे। सारा वातावरण गमगीन हो गया था। कोई आशीर्वाद माँग रहा था। कोई पछता रहा था। उसी बीच शेरे आगे बढ़कर शाहनी का पाँव छूता है और कहता है-‘शाहनी, कोई कुछ नहीं कर सका। राज भी पलट गया।’ शाहनी ने काँपता हुआ हाथ शेरे के सिर पर रखा और रूक-रूक कर कहा-

“तैनू भाग ‘जगण चन्ना (ओ चाँद तेरे भाग्य जागे)। शाहनी का यह आशीर्वाद सांकेतिक था। शाहनी की सम्पत्ति शेरे को ही मिलने वाली थी। शेरे ने दंगाइयों के साथ बहुत कत्ल किये थे। शाहनी की मृत्यु भी उसे ही करनी थी, लेकिन वह कर न सका। तब भी शेरे के भाग जगने वाले थे। शाहनी का आशीर्वाद भी उसे मिला।

प्रश्न 17.
शाहनी के जाने पर लोगों के मन में क्या अफसोस होता है?
उत्तर-
शाहनी पाकिस्तान छोड़कर भारत आ रही हैं। वह अपना सब कुछ गंवा चुकी हैं। गाँव के लोग भी दु:खी हैं। लोग अफसोस कर रहे हैं। शेरे कहता है-कोई कुछ नहीं कर सका। अर्थात् शाहनी को कोई रोक नहीं सका क्योंकि राज ही पलट गया था। दाऊद खाँ सोच रहा है-“कहाँ जायेगी कैसे रहेगी? कितना अच्छा व्यवहार था उसका हम सबके साथ। वह सबों का खबर रखती थी और सबकी मदद करती थी।” लोग बोल रहे थे-“शाहनी मन में मैल न लाना। कुछ कर सकते तो उठा न रखते। वक्त ही ऐसा है, राज पलट गया है।”

प्रश्न 18.
‘शाहनी चौंक पड़ी। देर-मेरे घर में मुझे देर। आँसुओं की भंवर में न जाने कहाँ से विद्रोह उमड़ पड़ा।’-इस उद्धरण की सप्रसंग व्याख्या करें।
उत्तर-
सप्रसंग व्याख्या-प्रस्तुत व्याख्या पंक्तियाँ कृष्णा सोबती रचित हमारी पाठ्य-पुस्तक ‘दिगंत, भाग-1’ में संकलित कहानी ‘सिक्का बदल गया’ से उद्धृत हैं। वातावरण बड़ा गमहीन है। सद्विचारों एवं सद्व्यवहारों से युक्त बड़ी हवेली की एकमात्र स्वामिनी शाहनी अन्यत्र जाने को विवश-बाध्य है। थानेदार दाऊद खाँ उससे बुरे समय के लिए कुछ नकद साथ रख लेने का भाव भरा आग्रह कर रहा है। पर, शेरा इस शक के कारण कि वह कुछ माल मार रहा है, देर होने की बात उठाता है। इसी पर शाहनी की दो-टूक होती मन:स्थिति को व्यजित करने वाली प्रस्तुत पंक्तियाँ आयी हैं।

https://www.evidyarthi.in/

शाहनी हवेली की एकमात्र स्वामिनी रही है, पर आज उसे छोड़ जाना है। क्योंकि . परिस्थितियों के कठिन संघात से देश बँट चुका है। अब किसी के करने से कुछ होने जानेवाला नहीं। देश की सीमा के विभाजन के साथ ही लोगों के दिल भी बँट चुके हैं। उक्त परिस्थितियों . में मन में आवेगों के तूफान को संभाले शाहनी के दिल में शेरा का यह कथन तीर-सा चुभता है। ओह? यह भी कैसा दिन? अपने ही घर में उसे देर हो रही है और वह कुछ नहीं कर सकती। वह आँसुओं की भँवर में डूब-उतरा रही है। थोड़ी देर के लिए उस शांत-संयत दिल में भी विद्रोह उमड़ पड़ता है।

उसे लगता है कि वह इन सबके प्रति विद्रोह कर दे, जाने से इनकार कर दे, पर अंततोगत्वा परिस्थितियों के कठोर यथार्थ के आगे कुछ नहीं कर पाती है, आँसूओं के घूट पीकर रह जाती है।

यह प्रसंग बड़ा ही मार्मिक है। शाहनी अपने पुरखों के घर में है। वह एक बड़े घर की रानी है। शेरे जैसे लोग उसके ही अन्न पर पले हैं और उसे ही उसके ही घर में देर होने की बात कहते हैं। ‘देर हो रही है।’ यह वाक्य शाहनी के कानों में गूंजने लगता है। अपना वतन, अपनी जमीन अपना घर छोड़ने का यह दृश्य बड़ा ही मार्मिक है।

प्रश्न 19.
घर छोड़ते समय शाहनी की मनोदशा का वर्णन अपने शब्दों में करें।
उत्तर-
कृष्णा सोबती लिखित कहानी ‘सिक्का बदल गया’ शीर्षक के केन्द्र में शाहनी नामक पात्रा है। इसी के इर्द-गिर्द सारी कहानी घटित होती है। वह स्वभाव से अत्यंत उदार और उच्चाशय है। वह शाहनी की पत्नी के रूप में आपार वैभव की स्वामिनी रह चुकी है, किन्तु उसका मानव-सुलभ सत्वगुण सदा जाग्रत रहा है। वह सबों से हिल-मिलकर रहनेवाली है। पर, कालचक्र में पाकर जब भारत का विभाजन होता है तो उसे वह स्थान छोड़ने को मजबूर होना पड़ता है। उस हवेली और उसके आस-पास की सारी-चीजों से उसका हार्दिक अपनत्व और ममत्व है।

अत: उन्हें छोड़ते समय वह दुःख एवं करुण भावनाओं की उत्ताल तरंगों में गिरती-पछड़ती है। भाग्य ने भी कैसा दिन दिखाया है उसे? जो हवेली, खेत-खलिहान, बाग-बगीचे सहित तमाम लोग उसके अपने थे, आज सभी बेगाने हैं। साथ में पति और पुत्र तक नहीं। इस प्रकार लेखिका ने घर छोड़ते समय शाहनी की मनोदशा अत्यंत करुण, पीड़ित एवं दयनीय है।

प्रश्न 20.
निम्नलिखित वाक्यों की सप्रसंग व्याख्या करें:
(क) जी छोटा हो रहा है, पर जिनके सामने हमेशा बड़ी बनी रही है, उनके सामने वह छोटी न होगी।

सप्रसंग व्याख्या-
प्रस्तुत सारगर्भित पंक्तियाँ सोबती लिखित कहानी गद्यावतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ‘दिगंत, भाग-1’ में संकलित ‘सिक्का बदल गया’ से अवतरित है। स्वतंत्रता-प्राप्ति के साथ ही भारत का विभाजन भी हो गया। कहानी की सर्वप्रमुख पात्रा शाहनी विभाजन-जन्य मारक स्थितियों की शिकार है। उसे अपनी हवेली छोड़नी पड़ रही है। लोगों का हुजूम उमड़ा पड़ा है। उसके मन में एक बार पुनः हवेली को अंदर से देख की तीव्र इच्छा होती है, पर वह. अपनी कमजोरी को प्रकट नहीं होने देती। प्रस्तुत वाक्य वहीं का है।

अपनी हवेली को अंतिम, बार फिर से देख लेने की लालसा के बावजूद
उसकी देहरी से बाहर निकली शाहनी के मन में तीव्र अंतर्द्वन्द्व है। एक
ओर यदि वह उसे जीभर पुनः देखना चाहती है तो दूसरी ओर उसके

ध्यान में वहाँ जुटे वे सभी लोग भी हैं जो कभी उसकी मातशाती करते थे। उनके सामने वह हमेशा बड़ी बनी रही है और अपना बड़प्पन दिखाती रही है। सभी उसकी उँगलियों पर नाचते थे। यह सारा कुछ उसका अपना था। उसके समान वहाँ कोई न था। पर आज स्थिति की विडंबना है उसे अपना सारा कुछ छोड़ कर जाना पड़ रहा है।

कितनी दारुण और दयनीय दशा है यह फिर भी वह उन लोगों के सामने अपनी कमजोरी नहीं दिखाएगी। यह उसके स्वभाव के अनुकूल नहीं वह हमेशा बड़ी रही है तो आज भी अपनी दीनता प्रदर्शित न करेगी और दया की भीख न माँगेगी और न ही हवेली के प्रति अपनी कोमल भावनाओं का इजहार करेगी। यद्यपि उसका जी अपने-ही-आप छोटा हो रहा है। प्रस्तुत पंक्तियों में शाहनी का स्वाभिमान एवं बड़प्पन झलकता है।।

(ख) आस-पास के हरे-हरे खेतों में से घिरे गाँवों में रात खून बरसा रही थी।
सप्रसंग व्याख्या-
प्रस्तुत सारगर्भित पंक्ति में देश-विभाजन की त्रासदी पर लिखित बहुचर्चित एवं बहुप्रशंसित कहानी 'सिक्का बदल गया' से उद्धत है। सुप्रसिद्ध लेखिका कृष्णा सोबती ने कहानी के अंत में इस पंक्ति के माध्यम से दिल हिलाकर रख देने वाली उस स्थिति को साकार कर दिया है, जो भारत-विभाजन के फलस्वरूप उत्पन्न हुई थी और जिसकी टीस एवं कसक आज भी यथावत है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ ही भारत का विभाजन हो चुका है, मुल्क बँट गया है, सिक्का बदल गया है। कथानायिका शाहनी इस दुःसह वेदना से दुःखी है। वह अपनी बहुमूल्य निधि हवेली, जिसके साथ उसकी न जाने कितनी स्मृतियाँ, कितने संवेदन स्थायी रूप से संयुक्त हैं, छोड़कर चली गई या कहिए ले जाई गई। उपस्थित जन समूह निर्वाक और निस्पंद है। मानों जीवन का स्त्रोत सूख गया और निर्जीवता ही शेष है।

उसी समय की हृदयविदारक स्थिति को अपनी सशक्त लेखनी के माध्यम से उकेरती हुई लेखिका कहती है कि तब जब सबकी श्रद्धा भाजन शाहनी चली गई चारों ओर अँधेरा छा गया। गाँव हरे-भरे खेतों से घिरे थे लेकिन हरे खेतों के बीच बसे हिन्दू गाँवों में रात के खून बरसा रही थी, अर्थात् रात में हिन्दुओं का कत्ल हो रहा था। गाँव में खून की होली खेली जा रही थी। कहीं कोई जीवन की हलचल नहीं। ऐसा इसलिए हो रहा है, क्योंकि राज पटल गया और सिक्का भी बदल गया था। लोग भी बदल गये हैं।

प्रश्न 21.
प्रस्तुत कहानी का शीर्षक "सिक्का बदल गया' कहाँ तक सार्थक है? अपना मत दें।
उत्तर-
किसी भी रचना का शीर्षक उसका द्वार होता है जिसे देखकर ही अन्दर आने की इच्छा-अनिच्छा होती है। अगर द्वार आकर्षक है तो अंदर झाँकने या अन्दर की बात जानने की उत्सुकता स्वाभाविक रूप से उत्पन्न होती है। अत: रचना का शीर्षक आकर्षक होना अत्यावश्यक है। दूसरी बात है रचना की संक्षिप्तता और रचना के मूल भाव का संवहन करना।।

उक्त दोनों ही दृष्टि से 'सिक्का बदल गया' कहानी शीर्षक अत्यन्त ही उपयुक्त है। कहानी का शीर्षक पढ़ते ही यह जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि 'सिक्का बदल गया' आखिर है क्या? यह शीर्षक आकर्षक है और कहानी का भाव जानने के लिए पाठक को बाध्य करता है। कहानी का शीर्षक यह स्पष्ट करता है कि राज बदल गया है। परिस्थितियाँ बदल गई हैं। कहानी की शुरूआत भी इसी भाव से होती है कि परिस्थितियाँ बदल गई हैं, राज्य बदल गया है। शाहनी को अनुभव हो गया है कि उसे अपना घर-द्वार, जमीन-जायदाद सबकुछ छोड़ना होगा। ऐसा होता भी है। कहानी अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँचती है। शाहनी घर छोड़ ट्रक पर बैठ जाती है, सिक्का बदल गया है पूर्णतः सार्थक समचीन और सटीक है यह शीर्षक।

https://www.evidyarthi.in/

सिक्का बदल गया भाषा की बात

प्रश्न 1.
इस कहानी में पंजाबी भाषा के कई वाक्य हैं। उन्हें हिन्दी में अनूदित करें।
उत्तर-
(a) ऐ मर गई एँ-रब्ब तैनू मौत दे।
ऐ मर गई क्या, भगवान, तुझको मौत दे।

(b) ऐ आई यां-क्यों छावेले तड़पना एं?
यह यहाँ आई, क्यों सबेरे-सबेरे तड़पते हो।

(c) रब्बू ने एही मंजूरसी-भगवान को यही मंजूर है।
(d) रब्ब तुहानू सलामत रक्खे बच्चा खुशियाँ बक्शे..........भगवान तुम्हें सुरक्षित रखें, खुशियाँ दें।
(e) तैनू भाग जगण चन्नाः-ओ चाँद, तेरे भाग्य जागें।

प्रश्न 2.
निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखें। दरिया, आसमान, सूर्य, आँख, पानी, सोना, पुत्र, घर
उत्तर-

- शब्द – पर्यायवाची शब्द
- दरिया – प्रवाहिता, नदी, सरिता
- आसमान – आकाश, नभ, गगन
- सूर्य – दिनकर, भास्कर, दिवाकर आँख
- आँख – लोचन, नयन, नेत्र पानी
- पानी – जल, नीर, अंबू सोना
- सोना – स्वर्ण, कंचन
- पुत्र – बेटा, लड़का, सुत
- घर – गृह, निकेतन, आलय

प्रश्न 3.
निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन बनाइए दुलहन, नजर, हवेली, कोठरी,
साथी, आँसू, देवता
उत्तर-

- एकवचन – बहुवचन
- नजर – नजरें।
- हवेली – हवेलियाँ
- कोठरी – कोठरियाँ
- साथी – साथियों
- आँसू – आँसू (हमेशा बहुवचन)
- देवता – देवताओं

प्रश्न 4.
‘पर-पर वह ऐसा नहीं-सामने बैठी शाहनी नहीं, शाहनी के माथ उसकी आँखों में तैर गए।’ यहाँ ‘आँखों मैं तैर गए’ का क्या अर्थ है?
उत्तर-
यहाँ ‘आँखों में तैर गए’ का अर्थ है-याद आ गय।

प्रश्न 5.
‘शाहनी, आज तक ऐसा न हुआ, न कभी सुना, गजब हो गया, अंधेर पड़ गया। यहाँ ‘अंधेर पड़ गया’ मुहावरा है। मुहावरे के प्रयोग के बिना इसी वाक्य को इस प्रकार लिखें कि अर्थ परिवर्तित न हो।
उत्तर-
‘शाहनी, आज तक ऐमा न हुआ न कभी सुना, गजब हा गया, अनर्थ हो गया’

प्रश्न 6.
‘जमीन तो सोना उगलती है।’ यहाँ सोना उगलने में क्या तात्पर्य है?
उत्तर-
‘जमीन सोना उगलती है’ से तात्पर्य यह है कि जमीन से धन-धान्य, फसलें, आदि उपजती हैं।

प्रश्न 7.
सलामत एक भाववाचक संज्ञा है। इसका विशेषण रूप हुआ सलीम।
ऐसे ही नीचे के शब्दों के विशेषण रूप लिखें
महारत, रहमत, तिजारत, शराफत, शरारत
उत्तर-

- संज्ञा – विशेषण
- महारत – महारती
- रहमत – रहीम
- तिजारत – तिजारती
- शराफत – शरीफ
- शरारत – शरारती

https://www.evidyarthi.in/